हुज़ूर आप ﷺ आए
तो दिल जगमगाए

ईद मीलादुन्नबी

(सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिहि वसल्लम)

मीलादुन्नबी ﷺ की ख़ुशियां मनाना
अल्लाह عزوجل का हुक्म है।

हमारे नबी ﷺ की सुन्नत है।

उलमाए देबन्द का अ़क़ीदा भी मीलाद शरीफ मनाना
जाइज़ और मुस्तहब अम्र का था।

मीलादुन्नबी ﷺ अल्लाह की तौहीद की
दलील है और रद्दे शिर्क है।

मीलादुन्नबी ﷺ की ख़ुशी में ख़ुशियां मनाना,
जश्न करना, कुमकुमे रौशन करना,
जुलूस निकालना और दिल खोलकर ख़र्च करना
ये बारगाहे इलाही में मक़बूल और रज़ा का बाइस है।

हम ''बारह वफात'' नहीं मनाते बल्कि
''ईद मीलादुन्नबी ﷺ'' मनाते हैं।

मुसन्निफ

शैख़ुल इस्लाम
डॉ. मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी مدظلہ العالی

Minhaj Publications India.

1st Floor, Isma Complex, Next to Aqsa Complex, Tandalja Road,
Vadodara-390 012 (Gujarat) | Ph.: +91-989 896 3623, +91-972 562 1001
E-mail : sales@minhajproductions.in
www.minhajproductions.in / www.minhaj.in

हुज़ूर शैख़ुल इस्लाम डॉ. मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी مدظلہ العالی ने मीलादुन्नबी ﷺ के मुख़्तलिफ पहलुओं पर क़ुरआनो सुन्नत व आसारे सहाबा और अक़्वाले अइम्मओ मुहद्दिसीन की रोशनी में इन्तिहाई जामेअ़ और सैर हासिल बहस की है। यूं पहली बार ''मीलादुन्नबी ﷺ'' पर दलाइले शरइय्या इस हुस्ने तर्तीब से यकजा़ हो गए हैं और इस ज़ख़ीम किताब 831 पेज की सूरत में अहले इल्मो दानिश की ख़िदमत में पेश किए जा रहे हैं। इस किताब की अहमिय्यतो इफादिय्यत और इल्मी शकाहत का अंदाज़ा इसके मुतालअ़ा के बाद ही लगाया जा सकेगा।

लोगों में किताबें पढ़ने का शौक़ बाक़ी नहीं रहा (इल्ला माशा अल्लाह) और बिना पढ़े कुछ लाइल्म लोग शिर्को बिदअ़त के फतवे लगाते हैं। ख़ुद गुमराह होते हैं और आ़म भोले भाले उम्मतियों को भी गुमराह करते हैं। उनके ईमानो अ़क़ीदे बचाने के लिए ये हैण्डबिल पर्चे शाया किए गए हैं ताकि आक़ा ﷺ के भोले भाले उम्मतियों को इस बात का पता चल सके कि सही क्या है और ग़लत क्या है? ताकि वो अपनी आख़िरत को बर्बाद होने से बचा सकें।

मीलादे मुस्तफा ﷺ की ख़ुशियां मनाने का हुक्मे ख़ुदावन्दी

अल्लाह तआ़ला के फज़्ल और उसकी नेअ़मतों का शुक्र बजा लाने का एक मक़बूले आ़म तरीक़ा ख़ुशिओ मसर्रत का ऐलानिया इज़्हार है। मीलादे मुस्तफा ﷺ से बड़ी नेअ़मत और क्या हो सकती है। ये वो नेअ़मते उज़्मा है जिसके लिए ख़ुद रब्बे करीम ख़ुशियां मनाने का हुक्म फरमाता है:

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِکَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ○ (يونس، ١٠:٥٨)

''फरमा दीजिए: (ये सब कुछ) अल्लाह के फज़्ल और उसकी रहमत के बाइस है (जो बेअ़सते मुहम्मदी ﷺ के ज़रिए तुम पर हुआ है) पस मुसलमानों को चाहिए कि इस पर ख़ुशियां मनाएं, ये (ख़ुशियां मनाना) उससे कहीं बेहतर है जिसे वो जमा करते हैं।''

इस आयाए करीमा में अल्लाह तआ़ला का रूए ख़िताब अपने हबीब ﷺ से है कि अपने सहाबा और उनके ज़रिए पूरी उम्मत को बता दीजिए कि उन पर अल्लाह की जो रहमत नाज़िल हुई है वो उनसे इस अम्र का तक़ाज़ा करती है कि उस पर जिस क़द्र मुम्किन हो सके ख़ुशी और मसर्रत का इज़्हार करें, और जिस दिन हबीबे ख़ुदा ﷺ की विलादते मुबारका की सूरत में अ़ज़ीम तरीन नेअ़मत उन्हें अ़ता की गई, इसे शायाने शान तरीक़े से मनाएं। इस आयत में हुसूले नेअ़मत की ये ख़ुशी उम्मत की इज्तिमाई ख़ुशी है जिसे इज्तिमाई तौर पर जश्न की सूरत में ही मनाया जा सकता है। चूंकि हुक्म हो गया है कि ख़ुशी मनाओ, और इज्तिमाई तौर पर ख़ुशी ईद के तौर पर मनाई जाती है या जश्न के तौर पर। लिहाज़ा आयते करीमा का मफ़्हूम वाज़ेह है कि मुसलमान यौमे विलादते रसूले अकरम ﷺ को ''ईदे मीलादुन्नबी ﷺ'' के तौर पर मनाए।

किताब ''मीलादुन्नबी ﷺ'' के बाबे चहारुम ''जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ का क़ुरआने हकीम से इस्तिदलाल'' (पेज नं. 185 से 245 तक 60 पेज पर तक़रीबन 40 से 50 आयात के हवाले दिए गए हैं और उनकी तफ्सीर दी गई है। यहां ये छोटा सा पेम्फलेट इसका मुतहम्मिल नहीं है, लिहाज़ा सिर्फ एक आयते पाक का हवाला पेश किया गया है।)

हुज़ूर ﷺ ने यौमे मीलाद पर रोज़ा रखकर ख़ुशी का इज़्हार फरमाया

क्या हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने ख़ुद अपने यौमे विलादत की बाबत बित्तख़सीस कोई हिदायत या तल्क़ीन फरमाई है? इसका जवाब इस्बात (हां) में है।

हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने ख़ुद सहाबाए किराम ﷺ को अपने यौमे मीलाद पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाने की तल्क़ीन फरमाई और तर्ग़ीब दी। आप ﷺ अपने मीलाद के दिन रोज़ा रखकर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इज़्हारे तशक्कुर व इम्तिनान फरमाते। आप ﷺ का ये अ़मले मुबारक दर्ज ज़ैल रिवायात से साबित है :

इमाम मुस्लिम (206-261 हि.) ने अपनी सहीह में रिवायत फरमाया कि हज़रत अबू क़तादा अंसारी ﷺ से मरवी है : ''हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ से पीर के दिन रोज़ा रखने के बारे में सवाल किया गया तो आप ﷺ ने फरमाया : ''इसी रोज़ मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मेरी बेअसत हुई और इसी रोज़ मेरे ऊपर कुरआन नाज़िल किया गया।''

(मुस्लिम शरीफ : किताबुस्सियाम : बाबो इस्तिहबाबे सियामे सलासते अय्यामिम मिन कुल्लि शह्र - जि. 3, स. 819, ह. 1162)

हुज़ूर ﷺ ने अपना मीलाद बकरे ज़िब्ह करके मनाया

हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने ख़ुद अपना मीलाद मनाया आप ﷺ ने अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाते हुए अपनी विलादत की ख़ुशी में बकरे ज़िब्ह किए और ज़ियाफत का इहतिमाम फरमाया .... (किताब में 6 हवाले दर्ज हैं) बैहक़ी सुनन कुब्रा - जि. 9, स. 300, ह. 43

किताब ''मीलादुन्नबी ﷺ '' के बाबे पंजुम ''जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ का अहादीस से इस्तिदलाल'' (पेज नं. 247 से 299 तक 52 पेज पर इन अहादीस से हवाले दिए गए हैं और उसकी तफ्सीर की गई है। तफ्सील के लिए किताब का मुतालआ़ फरमाएं।)

जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ अइम्मा व मुहद्दिसीन की नज़्र में

कुरआनो सुन्नत से जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ पर तफ्सीली दलाइल पेश करने के बाद इस बाब में उन अइम्मए किराम के हवालाजात देंगे जिन्होंने इन्इक़ादे जश्ने मीलाद के अहवाल बयान किए हैं। ये कहना मुत्लक़न ग़लत और ख़िलाफे हक़ीक़त है कि मीलाद पर मुन्अ़क़िद की जाने वाली तक़रीबात बिदअ़त हैं और उनकी इब्तिदा बर्रे सग़ीर पाको हिन्द के मसलमानों ने की। ये एक तस्लीम शुदा हक़ीक़त है कि तक़ारीबे मीलादुन्नबी ﷺ का इन्इक़ाद हिन्दुस्तान के मुलमानों की ईजाद नहीं, ना ही ये कोई बिदअ़त है। जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ का आग़ाज़ हालिया दौर के मुसलमानों ने नहीं किया बल्कि ये एक ऐसी तक़रीबे सईद है जो हरमैन शरीफैन मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा समैत पूरे आ़लमे अ़रब में सदियों से इन्इक़ाद पज़ीर होती रही है। इसके बाद वहां से दीगर अज्मी मुल्कों में भी इस तक़रीब का आग़ाज़ हुआ।

उलमाए देवबन्द का अ़क़ीदा भी मीलाद शरीफ मनाना जाइज़ और मुस्तहब अम्र का था

अ़ल्लामा इब्ने तैमिया (हि. 661-7-28)

अ़ल्लामा तक़ीउद्दीन अहमद बिन अ़ब्दुल हलीम बिन अ़ब्दुस्सलाम बिन तैमिया (ई. 1263-1328) अपनी किताब ''इक़्तेदा उस्सिरातिल मुस्तक़ीम लि मुख़ालिफति अस्हाबिल जहीम'' (पेज नं. 404) में लिखते हैं : ''मीलाद शरीफ की ताज़ीम और उसे शिआ़र बना लेना बाज़ लोगों का अ़मल है और इसमें उनके लिए अज्रे अ़ज़ीम भी है क्योंकि उनकी निय्यत नेक है और रसूले अकरम ﷺ की ताज़ीम भी है जैसा कि मैंने पहले बयान किया है कि बाज़ लोगों के नज़दीक एक अम्र अच्छा होता है और बाज़ मोमिन उसे कबीह कहते हैं।

नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान भोपाली (हि. 1307)

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के नामवर आ़लिमे दीन नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान भोपाली मीलाद शरीफ मनाने के बाबत लिखते हैं ''इसमें क्या बुराई है कि अगर हर रोज़ ज़िक्रे हज़रत ﷺ नहीं कर सकते उस्बूअ (हफ्ता) या हर माह में इसका इन्तिज़ाम करें कि किसी ना किसी दिन बैठकर ज़िक्र या वाज़े सीरतो विलादतो वफात आप हज़रत ﷺ का करें फिर अ़य्यामे माहे रबीउल अव्वल को भी ख़ाली ना छोड़ें और उन रिवायातो अख़्बारो आसार को पढ़ें, पढ़ाएं जो सही तौर पर साबित हैं।''

आगे लिखते हैं ''जिसको हज़रत ﷺ के मीलाद का हाल सुनकर फरहत हासिल ना हो और इस नेअ़मत के हुसूल पर शुक्रे ख़ुदा ना करे वो मुसलमान नहीं।''

(भोपाली अश्शुमामतुल अंबरिया फी मौलिद ख़ैर अल बरिया - स. 12)

मौलाना अशरफ अ़ली थानवी (हि. 1280-1362)

मौलाना अशरफ अ़ली थानवी (ई. 1863-1943) नामवर आ़लिमे देवबन्द थे, आप हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की चिश्ती के हाथ पर बैअ़त थे।

मीलादुन्नबी ﷺ पर आपके ख़ुत्बात का मज्मूआ़ भी शाए हुआ है, मजालिसे मौलिद पर ख़िताब करते हुए आप फरमाते हैं :

''ये तो ज़ाहिरी वजह थी बड़ी बात ये थी कि इस ज़माने में और दिनों से ज़्यादा हुज़ूर ﷺ के ज़िक्र को जी चाहा करता है और ये एक अम्रे तबइ है कि जिस ज़माने में कोई अम्र वाक़ेअ़ हुआ हो उसके आने से दिल में उस वाक़ेअ़ की तरफ ख़ुद ब ख़ुद ख़याल हुआ चाहता है और ख़याल को ये हरकत होना जब अम्रे तबइ है तो ज़बान से ज़िक्र हो जाना क्या मुज़ाइका है ये तो एक तबइ बात है।''

(अशरफ अ़ली थानवी, ख़ुत्बाते मीलादुन्नबी ﷺ -स. 190)

मौलाना अशरफ अ़ली थानवी के इस इक्तेबास से वाज़ेह हो जाता है कि उनका अ़क़ीदा हर्गिज़ मजालिसे मीलाद के क़ियाम के ख़िलाफ नहीं था। वो सिर्फ उसके लिए वक़्त मुअ़य्यन करने के हामी नहीं थे, बहरहाल मीलाद शरीफ मनाना उनके नज़दीक जाइज़ और मुस्तहब अम्र था।

उलमाए देवबन्द का मुत्तफिक़ा फैसला (हि. 1325)

हरमैन शरीफैन के उलमाए किराम ने उलमाए देवबन्द से इख़्तिलाफी व ऐतेक़ादी नोइय्यत के 26 मुख़्तलिफ सवालात पूछे तो हि. 1325 में मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी (हि. 1269-1346) ने इन सवालात को तहरीरी जवाब जो ''अल मुहन्नद अ़लल मुफन्नद'' नामी किताब की शक्ल में शाए हुआ इन जवाबात की तस्दीक़ 24 नामवर उलमाए देवबन्द ने अपने क़लम से की जिनमें मौलाना महमूदुल हसन देवबन्दी (हि. 1347) मौलाना अशरफ अ़ली थानवी (हि. 1362) और मौलाना आशिक़ इलाही मेरठी भी शामिल हैं, इन 24 उलमा ने सराहत की है कि जो कुछ ''अल मुहन्नद अ़लल मुफन्नद'' में तहरीर किया गया है वही इनका और इनके मशाइख़ का अ़क़ीदा है।

इस किताब में 21वां सवाल मीलाद शरीफ मनाने के मुतअ़ल्लिक़ हैं :

सवाल की इबारत ये है

सवाल : क्या तुम इसके काइल हो कि हुज़ूर ﷺ की विलादत का ज़िक्र शरअ़न कबीहे सय्येआ, हराम (मआ़ज़ल्लाह) है या और कुछ?

उलमाए देवबन्द ने इसका मुत्तफिक़ा जवाब यूं दिया

जवाब : ''हाशा कि हम तो क्या कोई भी मुसलमान ऐसा नहीं है कि आप ﷺ की विलादते शरीफा का ज़िक्र बल्कि आप ﷺ के नअ़लैन और आप ﷺ की सवारी के गधे के पेशाब के तज़्किरे को भी कबीहो बिदअ़ते सय्येआ या हराम कहे, वो जुम्ला हालात जिन्हें रसूले अकरम ﷺ से ज़रा

सा भी निस्बत है उनका ज़िक्र हमारे नज़दीक निहायत पसंदीदा और आला दर्जे का मुस्तहब है ख़्वाह ज़िक्रे विलादत शरीफ का हो या आप ﷺ के बोलो बराज़ नशिस्तो बर्ख़ास्त और बेदारी व ख़्वाब का तज़्किरा हो। जैसा कि हमारे रिसाला ''बराहीने क़ातेआ'' में मुतअ़द्दद जगह बिस्सराहत मज़्कूर है।''

(सहारनपूरी, अल मुहन्नद अ़लल मुफन्नद- स. 60, 61)

मीलाद मनाना अ़मले तौहीद है
मीलादुन्नबी ﷺ अल्लाह عزوجل की तौहीद की दलील है और रद्दे शिर्क है

यहां ये नुक्ता समझ लेना ज़रूरी है कि मीलाद मनाना फिल वाक़ेअ़ अ़मले तौहीद है। ये अ़मल ज़ाते बारी तआ़ला को वाहिदो यक्ता मानने की सबसे बड़ी दलील है क्यूं कि मीलाद मनाने से ये अम्र ख़ुद ब ख़ुद साबित हो जाता है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ का मीलाद मनाने वाले आप ﷺ को अल्लाह का बन्दा और अल्लाह की मख़्लूक़ मानते हैं और जिसकी विलादत मनाई जाए वो ख़ुदा नहीं हो सकता क्यूं कि ख़ुदा की ज़ात لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ (न उससे कोई पैदा हुआ है और न ही वो पैदा किया गया है) की शान की हामिल है। जबकि नबी वो ज़ात है जिसकी विलादत हुई हो जैसा कि हज़रत यह्या عليه السلام के हवाले से सूरए मर्यम में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फरमाया :

وَسَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ (مريم، ١٩: ١٥)

''और यह्या पर सलाम हो, उनकी मीलाद के दिन।''

हज़रत ईसा عليه السلام ने फरमाया :

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ (مريم، ١٩: ٣٣)

''और मुझ पर सलाम हो मेरे मीलाद के दिन।''

तो मीलाद मनाना गोया नबी को अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ क़रार देना है। हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ से अफज़लो आला मख़्लूक़ इस काइनात में कोई नहीं। जब हम आप ﷺ का मीलाद मनाते हैं तो अल्लाह तआ़ला की ख़ालिक़िय्यत और रसूल ﷺ की मख़्लूक़िय्यत का ऐलान कर रहे होते हैं कि आप ﷺ पैदा हुए। इससे बड़ी तौहीद और क्या है? मगर अहले बिदअ़त इस ख़ालिस अ़मले तौहीद को भी बज़अ़्मे ख़ीश शिर्क कहते हैं जो कि सरीहन ग़लत है।

क़ुरआनो हदीस में जश्ने मीलाद की अस्ल मौजूद है

गुज़िश्ता अब्वाब में क़ुरआन की आयात और मुतअ़द्दीद अहादीस के ज़रिए जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ की शरई हैसियत और उसकी अस्ल ग़र्ज़ो ग़ायत सराहत के साथ बयान की जा चुकी है। लिहाज़ा अस्लन हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की विलादत को अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत और उसका एहसाने अ़ज़ीम तसव्वुर करते हुए इसके हुसूल पर ख़ुशी मनाना और इसे बाइसे मसर्रतो फरहत जानकर तहदीसे नेअ़मत का फरीज़ा सरअंजाम देते हुए बतौरे ईद मनाना मुस्तहसन और क़ाबिले तक़्लीद अ़मल है। मज़ीद बरआं ये ख़ुशी मनाना न सिर्फ सुन्नते इलाहिय्या है बल्कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की अपनी सुन्नत भी क़रार पाता है, सहाबए किराम के आसार से भी साबित है और इस पर मुअय्यिद साबिक़ा उम्मतों के अ़मल की गवाही भी क़ुरआने हकीम ने सराहतन फराहम कर दी है। अब भी अगर कोई इसके जवाज़ और अदमे जवाज़ को बहसो मुनाज़रा का मौज़ू बनाए और इसको नाजाइज़, हराम और क़ाबिले मज़म्मत कहे तो इसे हटधर्मी और लाइल्मी के सिवा और क्या कहा जाएगा।

कुम कुमे रौशन करना

मक्का मुकर्रमा निहायत बरकतों वाला शहर है, वहां बैतुल्लाह भी है और मौलिदे रसूलुल्लाह ﷺ भी है। इसीलिए अल्लाह तआ़ला इस शहर की क़स्में याद फरमाता है। अहले मक्का के लिए मक्की होना एक एजाज़ है। ईद मीलादुन्नबी ﷺ के मौक़े पर अहले मक्का हमेशा जश्न मनाते और चरागां का ख़ास इहतिमाम करते। अइम्मा ने इसका तज़्किरा अपनी किताबों में किया है। जिनमें से चन्द रिवायात दर्जे ज़ैल हैं :

इमाम मुहम्मद जारुल्लाह बिन ज़हीरा हनफी (हि. 986) अहले मक्का के जश्ने मीलाद के बारे में लिखते हैं :

''हर साल मक्कए मुकर्रमा में बारह रबीउल अव्वल की रात अहले मक्का का ये मामूल है कि क़ाज़ी-ए-मक्का जो कि शाफिई है, मग़्रिब की नमाज़ के बाद लोगों के एक जम्मे ग़फीर के साथ मौलिद शरीफ की ज़ियारत के लिए जाते हैं। उन लोगों में तीनों मज़ाहिबे फिक़्ह के क़ाज़ी, अक्सर फुक़हा, फुज़ला और अहले शहर होते हैं जिनके हाथों में फानूस और बड़ी-बड़ी शम्एं होती हैं।''

(तफ्सील के लिए किताब ''मीलादुन्नबी ﷺ '' के पेज नं. 646-656 का मुतालआ़ फरमाएं।)

मीलादुन्नबी ﷺ के मौक़े पर जुलूस निकालना सक़ाफत (कल्चर) का हिस्सा है

अगर यौमे आज़ादी मनाना सक़ाफती नुक़्तए नज़र से दुरुस्त है तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ के मीलाद का दिन जो इन्सानी तारीख़ का अहम तरीन दिन है क्यूं न मनाया जाए ? अगर यौमे आज़ादी पर तोपों की सलामी दी जाती है तो मीलाद के दिन क्यूं न दी जाए ? इस तरह और मौक़ों पर चरागा़ होता है तो यौमे मीलाद पर चरागा़ क्यूं न किया जाए ? अगर क़ौमी त्योहार पर क़ौम अपनी इज़्ज़तो इफ्तिख़ार को नुमायां करती है तो हुज़ूर रहमते आ़लम ﷺ की विलादत के दिन वो बतौरे उम्मत अपना जज़्बए इफ्तिख़ार क्यूं न नुमायां करे। इसी तरह मीलादुन्नबी ﷺ के जुलूस के जवाज़ पर भी किसी इस्तिदलाल की ज़रूरत नहीं। ख़ुशी और इह्तिजाज़ दोनों मौक़ों पर जुलूस निकालना भी हमारे कल्चर का हिस्सा बन गया है। हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ के मीलाद पर अगर हम जल्सा व जुलूस और सलातो सलाम का इहतिमाम करते हैं तो इसका शरई जवाज़ दर्याफ्त करने की क्या ज़रूरत है ?

ये पूछा जाता है कि अ़रब क्यूं जुलूस नहीं निकालते ? इसका जवाब ये है कि अ़रब के कल्चर में जुलूस नहीं, जबकि अजम के कल्चर में ऐसा है। मुत्तहिदा अ़रब अमीरात और मिस्र वग़ैरह के लोग मीलाद मनाते हैं लेकिन जुलूस निकालना उनके कल्चर में नहीं, जबकि हमारे यहां तो हॉकी के मैच में कामयाबी पर भी जुलूस निकालना ख़ुशी का मज़्हर समझा जाता है। जीतने वाली टीमों व इलेक्शन जीतने वाले उम्मीदवारान का इस्तिक़बाल भी जुलूस की शक्ल में किया जाता है।

लिहाज़ा जो अ़मल शरीअ़त में मना नहीं बल्कि मुबाह है और सक़ाफती ज़रूरत बन गया है और इसका अस्ल मक़सद हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की विलादत की ख़ुशी मनाना हे तो इस पर ऐतिराज़ करने की कोई गुंजाइश नहीं और न ही कोई ज़रूरत है।

जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ पर ख़र्च करना फुज़ूल ख़र्ची नहीं

हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ के मीलाद की ख़ुशी मनाना इस्राफ (फुज़ूल ख़र्ची) नहीं क्यूंकि ये अम्रे ख़ैर है और अइम्मओ फुक़्हा के नज़्दीक उमूरे ख़ैर में इस्राफ नहीं। नीचे हम चंद अइम्मा के अक़्वाल दर्ज कर

रहे हैं जिनके मुताबिक़ उमूरे ख़ैर पर ख़र्च करना इस्राफ के ज़ुमरे में नहीं आता :

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ फरमाते है :

ليس فى الحلال اسراف، وإنما السرف فى إرتكاب المعاصى۔ (دمیاطی، إعانة الطالبین، ۲:۱۵۷)

''हलाल में कोई इस्राफ नहीं, इस्राफ सिर्फ नाफरमानी के इर्तिकाब में है।''

हज़रत सुफ्यान सौरी फरमाते हैं :

الحلال لا يحتمل السرف۔ (دمیاطی، إعانة الطالبین، ۲:۱۵۷)

''हलाल काम में इस्राफ का इह्तिमाल नहीं होता।''

इन अक्वाल से वाज़ेह होता है कि नेकी और भलाई के कामों में जितना भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जाए और ख़र्च किया जाए उसका शुमार फुज़ूल ख़र्ची में नहीं होता। लिहाज़ा जो लोग जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ पर ख़र्च करने को फुज़ूल ख़र्ची मानते हैं उन्हें अपनी इस्लाह कर लेनी चाहिए और इस अम्रे ख़ैर को हर्गिज़ निशानए ता'न नहीं बनाना चाहिए।

हम ''बारह वफात'' नहीं मनाते बल्कि ''ईद मीलादुन्नबी ﷺ '' मनाते हैं

कुछ सादा देहाती लोगों में ईद मीलादुन्नबी ﷺ के दिन को उर्फे आ़म में ''बारह वफात'' भी कहते हैं। ये कम इल्मी की वजह से है या तो वैसे ही उर्फे आ़म में मशहूर है। इस बात का ग़लत फाइदा उठाकर कुछ मुन्किरीने ईद मीलादुन्नबी ﷺ लोगों में ग़लत फहमी फैलाते हैं और कहते हैं कि 12वीं के दिन को ही आक़ा ﷺ का इस दुन्या से पर्दा हुआ। इसमें मुहद्दिसीन व इल्मी शख़्सिय्यतों का इत्तिफाक़ नहीं है यानी उनका कहने का मतलब ये होता है कि ये ग़लत मना रहे हैं और लोगों में ये ग़लतफहमियां फैलाते हैं व फित्ना पर्दाज़ी करते हैं।

इसका जवाब ये है कि हम लोग ''ईद मीलादुन्नबी ﷺ '' मनाते हैं ''बारह वफात'' नहीं, आक़ा ﷺ की ''पैदाइश'' की ख़ुशियां मनाते हैं ''वफात'' का दिन नहीं। अगर मुहद्दिसीन का व इल्मी शख़्सिय्यतों का इख़्तिलाफ होगा भी तो वफात के दिन के लिए होगा, पैदाइश के दिन पर कोई इख़्तिलाफ नहीं। आप ﷺ की पैदाइश की तारीख़ 12वीं रबीउल अव्वल तमाम अइम्मओ मुहद्दिसीन के नज़्दीक मुत्तफक़ अ़लैह है, इसमें कोई इख़्तिलाफ नहीं है। हम पैदाइश का दिन ''ईद मीलादुन्नबी ﷺ '' मनाते हैं।

इस्लाह तलब पहलू

ये बात ख़ुश आइन्द है कि मीलादुन्नबी ﷺ का अ़क़ीदा रखने वाले और जश्ने मीलाद के जुलूस का इहतिमाम करने वाले हुज़ूर ﷺ से इतनी महब्बतो अ़क़ीदत का मुज़ाहिरा करते हैं कि मीलाद की ख़ुशियों को जुज़्वे ईमान समझते हैं। ये सब अपनी जगह दुरुस्त और हक़ है मगर उन्हें इसके तक़ाज़ों को भी बहरहाल मद्देनज़र रखना चाहिए। काश! इन अ़क़ीदतमन्दों को बारगाहे मुस्तफा ﷺ की ताज़ीम और आप ﷺ की तालीमात का भी कमा हक़्क़ोहु इल्म होता।

इस मुबारक मौक़े के फुयूज़ात समेटने के लिए ज़रूरी है कि हुज़ूर ﷺ के मीलाद की पाकीज़ा महफिलों में इस अंदाज़ से शिर्कत करें जिस में शरीअ़ते पाक के अहकाम की मामूली ख़िलाफ वर्ज़ी भी न होने पाए लेकिन फी ज़माना बाज़ मक़ामात पर मक़ामो ताज़ीमे रिसालत से बेख़बर जाहिल लोग जश्ने मीलाद को गुनागो मुन्किरात, बिदअ़त और मुहर्रमात से मुलव्विस करके बहुत बड़ी नादानी और बेअदबी का मुज़ाहिरा करते हैं। ये देखने में आता है कि जुलूसे मीलाद में ढोल ढमाके, फहश फिल्मी गानों की रिकॉर्डिंग, नौजवानों के रक़्सो सुरूर और इख़्तिलाते मर्दो ज़न जैसे हराम

और नाजाइज़ उमूर बेहिजाबाना सरअंजाम दिए जाते हैं जो कि इन्तिहाई क़ाबिले अफसोस और क़ाबिले मज़म्मत है और अदबो ताज़ीमे रसूल ﷺ की सरासर मनाफी है। अगर उन लोगों को इन मुहर्रमात और ख़िलाफे अदब कामों से रोका जाता है तो वो बजाए बाज़ आने के मना करने वाले को मीलादुन्नबी ﷺ का मुन्किर ठहराकर इस्लाहे अहवाल की तरफ तवज्जोह ही नहीं देते। उन नाम निहाद अक़ीदत मन्दों को सख़्ती से समझाने की ज़रूरत है वर्ना जश्ने मीलादुन्नबी ﷺ की पाकीज़गी और तक़द्दुस उन बेअदब और जाहिल लोगों की वजह से महज़ एक रस्म बनकर रह जाएगा।

जब तक इन महाफिलो मजालिस और जश्ने मीलाद को अदबो ताज़ीमे रिसालते मआब ﷺ के सांचे में नहीं ढाल लिया जाता और ऐसी तक़ारीब से उन तमाम मुहर्रमात का ख़ात्मा नहीं कर दिया जाता उस वक़्त तक अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल ﷺ की रज़ा और ख़ुशनूदी हासिल नहीं हो सकती। ऐसी महफिलों में जहां बारगाहे रिसालत ﷺ के अदब से पहलूतही हो रही हो न सिर्फ ये कि रहमते ख़ुदावन्दी और उसके फरिश्तों का नुज़ूल नहीं होता बल्कि अहले महाफिलो मुन्तज़िमीने जुलूस ख़ुदा के ग़ज़ब और हुज़ूर ﷺ की नाराज़गी के मुस्तहिक़ ठहरते हैं।

आज के दौर की अहम ज़रूरत

आज के दौर में इस अम्र की ज़रूरत पहले से कहीं ज़्यादा है कि हम अपनी औलाद को हुब्बे रसूले अकरम ﷺ की तालीम दें और उनकी तर्बियत इस नहज पर करें कि इनमें आक़ाए दो जहां ﷺ से यकगुना हुब्बी व क़ल्बी तअ़ल्लुक़ पुख़्ता से पुख़्तातर होता चला जाए। उनके अंदर ये तअ़ल्लुक़ पैदा करने के लिए मीलादुन्नबी ﷺ मनाने की तर्ग़ीब मोअस्सर तरीन ज़रीआ़ है। इस ज़मन में हमारी रहनुमाई इस हदीसे मुबारका से होती है जिसमें औलाद को हुब्बे रसूल ﷺ की तालीम देने की तल्कीन इन अल्फाज़ में फरमाई गई है :

"अपनी औलाद को तीन ख़स्लतें सिखाओ, अपने नबी ﷺ की महब्बत, नबी ﷺ के अहले बैत की महब्बत और (कसरत के साथ) तिलावते कुरआन।"

(सुयूती, जामेउस्सग़ीर फी अहादीसिल बशीरिन्नज़ीर - 1 : 25, 2:311)

फी ज़माना औलाद को हुज़ूर ﷺ की महब्बत सिखाने का इससे मोअस्सर और नतीजा ख़ेज़ तरीक़ा कोई और नहीं कि जब वो शुऊरो आगाही की उम्र को पहुंचें तो उन्हें हुज़ूर ﷺ का मीलाद मनाने की तर्ग़ीब दें।

अल्लाह ﷻ अपने हबीबे पाक ﷺ के वसीले से हम सबको अपने हिफ्ज़ो ईमान में रखे। ईमान की दौलत दे, ईमान पर इस्तिक़ामत दे और ईमान पर ख़ातिमा बिल ख़ैर फरमाए। आमीन सुम्मा आमीन...

अपील : पेम्फलेट, किताब और बयान को WhatsApp और E-mail पर और हार्ड कॉपी घर बैठे हासिल करने के लिए हमसे राब्ता फरमाएं। इस पर्चे की सॉफ्ट कॉपी मंगवाकर ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में प्रिन्ट करवाकर बांटें।